गांधी शताब्दी (1968) के महिनों पहले शताब्दी समिति के वरिष्ठ कार्यकर्ता पं. कुमार गंधर्व जी से मिले थे और उन्होंने कुमारजी से सहयोग की मांग की थी, लेकिन सहयोग कैसा हो यह उन्हें भी स्पष्ट नहीं था। कुमारजी ने 'विचार करूंगा' का आश्वासन जरूर उन्हें दिया।

सारी दुनिया ने जिसे माना हो ऐसे महान भारतीय व्यक्तित्व के प्रति हर एक जागरूक मन में, विशेषत: भारतीय मन में विशिष्ट एहसास हो यह स्वाभाविक ही है, चाहे वह शास्त्रज्ञ हो, कलाकार हो या दार्शनिक क्यों न हो।

कुमारजी ने विचारोपरान्त समिति को सूचना भेजी की वे नये राग की रचना के बारे में सोच रहे हैं। समिति के सदस्य यह समाचार पाकर बेहद प्रसन्न हुए।

कुमारजी की 60 वर्ष से अधिक की सृजनयात्रा में 'गांधी मल्हार' निश्चित ही खास जगह रखता है। दो-तीन प्रसंग आपके साथ साझा करूंगी, जिनका वास्तव में गांधी मल्हार से सीधे तौर पर कोई संबंध नहीं है, पर शायद सूक्ष्म रूप से है। वैसे कुमारजी को केवल एक बार 8 अगस्त 1942 को गांधीजी का दर्शनलाभ मिला था, जब उनके नेतृत्व में मुंबई के गोवालिया टैंक पर 'भारत छोड़ो आंदोलन' का आरंभ हुआ था।

गोवालिया टैंक मैदान जहाँ यह विशाल सभा हुई थी, अब ऑगस्ट क्रांती मैदान कहा जाता है- कुमारजी उन दिनों ऑपेराहाउस स्थित 'देवधर्स स्कूल ऑफ इंडियन म्यूझिक' में विद्यार्थी के रूप में रहते थे ..... इसी आंदोलन की पहली सभा में प्रो. बी.आर. देवधर के आदेश पर कुमारजी विद्यार्थियों को देशभक्ति के भजन और वंदेमातरम् गवाने वहाँ ले गये थे।

उस अजानुबाहु व्यक्तित्व के पहले दर्शन ने ही बाबा को अभिभूत कर दिया। उसके ऊपर कुमारजी तब और अचंभित हुए जब सामुहिक भजन गायन के समय गांधीजी ने विशाल समुदाय की एक लय में ताल देने की बात कही।

अपनी असाध्य बीमारी के चलते स्वास्थ्य लाभ लेने जब कुमारजी मुंबई से मध्यभारत के छोटे से गाँव - देवास पहुंचे - वह दिन था - 30 जनवरी 1948 (गांधी निर्वाण दिवस) - कुमारजी इस तिथी को कभी नहीं भूले। एक संयोग कहूं या क्या समझ में नहीं आ रहा - 12 जनवरी 1992 को कुमारजी का निधन हुआ। उन्हें इलाहाबाद से बचपन से बहुत अपनत्व रहा। उनका अस्थिकलश लेकर मैं 30 जनवरी को ही देवास से इलाहाबाद त्रिवेणी की ओर चली।

कुमारजी ने 11 धुन उगम राग बनाये, जैसे - मालवती, लगन गंधार, मघसुरजा, सहेली तोडी, बीहड-भैरव, भवमत-भैरव, निंदियारी, राही, मघवा, संजारी और अहिमोहिनी। 'धुन उगम राग' यानी वे राग जो धुन से उपजे हैं। जिनका आधार - एक धुन है।

उनका कथन - ''राग बनाये नहीं जाते, बन जाते हैं'' इन्हीं 'धुनउगमरागों' के संदर्भ में कहा गया। यहाँ यह बताना उचित होगा कि कुमारजी को 'मालवा की लोकधुनों' में कई परंपरागत रागों के बीज नज़र आये, साथ ही इन लोकधुनों में कुछ सर्वथा नये राग रूपों की संभावना भी दिखी, जिसने आगे चलकर धुनउगमरागों को साकार किया।

'गांधीमल्हार' की बात करें तो यह कोई - 'धुनउगमराग' तो है नहीं, उन रागों से यह भिन्न है - क्योंकि यहाँ किसी 'धुन' का आधार नहीं है बल्कि विचारपूर्वक इसे बुना गया है।

महात्मागांधी जी के व्यक्तित्व और कृतित्व को ध्यान में रखकर इस राग का ताना-बाना कुमारजी ने बुना है। गांधी राग की रचना की कल्पना दृढ़मूल होते ही मन में न जाने कितने प्रश्न कुमारजी के मन में उठे, जैसे - नींव किस राग की हो? क्योंकि उस राग की मूल प्रकृति और कुमारजी के मन में बसी गांधीजी की प्रतिमा, दोनों का मेल होना आवश्यक ही नहीं था, बल्कि वह उनकी पहली शर्त थी।

कुमारजी गांधीजी को बहुत मानते थे। उनमें विद्यमान सत्यशोध मतलब - अभय और करूणा इन दोनों प्रवृत्तियों के संगम में कुमारजी को हमेशा दिव्यता प्रतीत होती थी।

महात्माजी को राजनीति में मिली अभूतपूर्व सफलता, उनके कृतित्व से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हुए चमत्कारों का एहसास कुमारजी को भलीभांति था। कुमारजी का मस्तक नत होता था उनकी अभय साधना और करूणा के समक्ष।

इन दोनों विशिष्ट प्रवृत्तियों को समाहित करने के लिये उन्होंने 'मल्हार' राग को चुना और नाम दिया - 'गां ऽ धी मल्हार' मल्हार की प्रकृति गंभीर है और लचीली भी। इस राग में जिस 'शुद्ध गंधार' का प्रयोग जिस प्रकार से कुमारजी ने किया है उसे देखें / सुनें।

सारे संसार के प्रति गांधीजी की प्रेमभरी असीम करूणा व्यक्त करने के लिये 'मल्हार' का वह विशिष्ट 'कोमल निषार' तो है ही पर विशुद्ध सत्यसाधना, उम्रभर जिन सपनों को सीने से लगाकर पाला-पोसा उनकी अपने सामने जलाई जा रही होली को पलकें झपकाये बगैर (बिना किसी कटुता के) देखने का असामान्य धैर्य दुखियारों के आंसू पोछने के लिये बढ़े उनके अमृत कर कमल - यह सब व्यक्त करने के लिये कुमारजी ने - 'शुद्ध गंधार' की योजना इस राग में की।

'गंधार' का आरोही स्वरूप और अवरोही दर्शन - एक ही स्वर के दो पहलू इस राग की विशेषता है। राग **गांधी मल्हार** में कुमारजी द्वारा बनायी गयी दो बंदिशें (याने बडा ख्याल और द्रुत) उस राग-रूप का पूर्ण बखान करती है। चूंकि विषय गांधीजी के इर्दगिर्द है, बंदिशों के शब्द और उनसे उपजे भाव भी उस विषय को प्रस्तुत करते हैं ***(बडा ख्याल और द्रुत की बंदिशें जो अलग एजेटमेंट पे दी गई हैं उसे यहां छापा जाए)**

राग का शास्त्र, व्याकरण दिया है, रागांग का विस्तृत दर्शन, -आरोह-अवरोह, आलाप, पकड, तानों में बताया है।

कुमारजी कहते थे कि - ''राग तो नंगे होते हैं, बंदिशें उन्हें जामा पहनाती हैं''

उनका एक और विचार - 'राग की प्रोफाईल' याने 'राग को अलग अलग कोणों से देखने की कला'। अब यह प्रोफाईल तभी संभव है जब उसी एक राग मे ऐसी कई बंदिशें हों जो राग का अलग-अलग कोणों से दर्शन करवा सकें। अर्थात एक 'राग' जो कि नंगा है, अलग-अलग बंदिशों का जामा पहने। तभी वह विस्तार पायेगा।

धुन-उगम-राग और गांधीमल्हार की बंदिशें परिपूर्ण तो हैं लेकिन कोई भी राग और अधिक विस्तार तभी पा सकेगा जब उसमें इन उपलब्ध बंदिशों की परिधी के बाहर निकलकर नयी बंदिश बने।

यह -'मंतर' शायद उन सभी रागों के लिये भी लागू हो सकता है जिनकी रचना श्रेष्ठ कलाकारों ने अलग अलग समय पर की हैं।

*****

राग गांधी मल्हार, ताल एकताल, लय विलंबित

तुम हो धीर हो रे,
संजीवन भारत के विराट हो रे॥
आहत के आरत के सखा रे,
पावन आलोक अनोखे हो रे॥

स्थाई

–, –, –, ग री सा, सा नि़ –, ध़ नि़, सा | ग, –, –, – म ग, –, –, – |
ऽ, ऽ, ऽ, तु ऽ म, ऽ ऽ ऽ, ऽ हो, ऽ | धी, ऽ, ऽ, ऽ ऽ र, ऽ, ऽ, ऽ |
४ x

म प, म म, –, री सा, –, –, म | प म म –, –, –, री –, प, –, प |
हो ऽ, ऽ ऽ, ऽ, ऽ रे, ऽ, ऽ, सं | जी ऽ ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, व, ऽ, न |
० २

म प –, ग, –, म प प ध –, ग, –, म प – |
भा ऽ ऽ, ऽ, ऽ, र त के ऽ ऽ, ऽ, ऽ, वि ऽ ऽ |
०

म, ग॒, म ग॒ – म, री सा ग – सा – |
रा, ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ ट हो ऽ ऽ ऽ |
३

री, –, सा, ग री सा, सा नि़ –, ध़ नि़, सा |
रे, ऽ, ऽ, तु ऽ म, ऽ ऽ ऽ, ऽ हो ऽ |
४

अंतरा

–, –, –, म –, री, – प म, प | प नि॒, –, –, ध –, नि, –, सां – नि ध |
ऽ, ऽ, ऽ, आ ऽ, ऽ, ऽ ह ऽ, त | के ऽ, ऽ, ऽ, ऽ ऽ, आ, ऽ, र ऽ त ऽ |
४ x

ध नि –, –, सां, सां सां रीं, –, –, – | ध गं –, –, सां, – रीं सां सां नि, – ध, नि, सां |
के ऽ ऽ, ऽ, ऽ, स खा ऽ, ऽ, ऽ, ऽ | रे ऽ ऽ, ऽ, ऽ, ऽ पा ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ, व, न |
० २

सां ध, – नि, म –, प ग | –, म म ग, री ग म प, ध ध ग – |
आ ऽ, ऽ लो, ऽ ऽ, क ऽ | ऽ, अ ऽ ऽ, ऽ ऽ ऽ ऽ, ऽ नो ऽ ऽ |
०

–, म प –, ग़ म, री सा | ग – सा – |
ऽ, ऽ ऽ ऽ, ऽ ऽ, खे ऽ | हो ऽ ऽ ऽ |
३

री, –, सा, ग री | सा, सा नि़ –, ध़ नि़, सा |
रे, ऽ, ऽ, तु ऽ | म, ऽ ऽ ऽ, ऽ हो, ऽ |
४

राग गांधी मल्हार, ताल एकताल, लय द्रुत

तुम में सब रूप
एकहि पथ, एक मंत्र
समता साकार॥
दर्शन के अनुगामी
अंतर एकाकी
भीतों के आधार॥

स्थाई

सां सां	ध नि ध नि	प म	ध प प ग –	– –	म री प		
तु म	में ऽ ऽ ऽ	स ब	रू ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ऽ ऽ		
०	३	४	X	०	२		
प सां	सां सां ध नि	प म	म प – म ग –	– –	ग –		
तु म	में ऽ ऽ ऽ	स ब	रू ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ	प ऽ		
०	३	४	X	०	२		
म री	म री म री	प प	प नि	ध नि	सां सां		
ए ऽ	क ऽ ऽ हि	प थ	ए ऽ	क मं	ऽ त्र		
०	३	४	X	०	२		
सां नि ध	नि –	सां रीं मं	नि मं रीं	सां सां	नि	– ध	
स म ऽ	ता ऽ	सा ऽ ऽ	का ऽ ऽ	ऽ ऽ	ऽ	ऽ र	
०	३	४	X	०	२		

अंतरा

म री	प प	नि ध	नि नि	सां नि	सां –		
द र	श न	के ऽ	अ नु	गा ऽ	मी ऽ		
०	३	४	X	०	२		
सां –	– –	नि नि	नि सां रीं	सां –	नि –		
अं ऽ	ऽ ऽ	त र	ए ऽ ऽ	का ऽ	की ऽ		
०	३	४	X	०	२		
म री	प –	नि ध	ध नि सां रीं	सां नि	– ध		
भी ऽ	तों ऽ	के ऽ	आ ऽ ऽ ऽ	धा ऽ	ऽ र		
०	३	४	X	०	२		